लोकमत

Bikaner 4 April, 2017

वर्तमान युग में झलक उठा है इतिहास

महात्मा के महात्मा को देखकर श्रोताजन हो जाते है मंत्रमुग्ध

राष्ट्रपिता के आध्यात्मिक मार्गदर्शक श्रीमद् राजचंद्र को नाट्यांजलि : युगपुरूष महात्मा के महात्मा

जयपुर। भारतीय इतिहास की एक अनकही कहानी को प्रस्तुत करता अध्यात्म एवं संस्कृति को एक नया परिमाण बख्शता और मानवीय मूल्यों को उजागर करके सामाजिक उन्नति में महत्त्वपूर्ण प्रदान करता नाटक अर्थात् 'युगपुरूष – महात्मा के महात्मा', लगातार 'स्टैडिंग ओवेशन' पाता है और हजारों लोगों को प्रेम के दिव्य स्पर्श की अनुभूति कराता है। इस नाटक के 300 नाटकप्रयोग हो चूके हैं।

'युगपुरूष' केवल एक नाटक नहीं है, बल्कि दर्शकों को होनेवाला एक अनुपम अनुभव है। इस नाटक में दो युगपुरूष रंगमंच पर पुन: जीवित होते हैं और तब भारत के इतिहास का एक ऐसा पन्ना खुलता है जो दर्शकों को मुग्ध कर जाता है। ये दो युगपुरूष हैं– महात्मा गांधीजी और श्रीमद् राजचंद्रजी! महात्मा गांधीजी ने भारत तथा विश्व को सत्य और अहिंसा के सनातन सिद्धांत प्रदान किए हैं। परंतु बारिस्टर मोहनदास में इन सिद्धांतों को प्रस्थापित करने वाले, उनके चरित्र का गढ़न करनेवाले उनके आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे, श्रीमद् रामचंद्रजी।

मोहनदास को महात्मा में रूपांतरित करनेवाली एक गहन आध्यत्मिक संबंध का यशोगाथा इस नाटक में इतनी सुंदर और कलात्मक तरीके से प्रस्तुत की गई है कि जब नाटक के दर्शक इस यात्रा के साक्षी बनते हैं, तब उनके भी हृदय के तार झंकृत होने लगते है।

श्रीमद् राजचंद्र जी अध्यात्मयोगी युगपुरुष ज्ञानावतार श्रीमद् राजचंद्र जी का जन्म कार्तिक पूर्णिमा के पवित्र दिन, दिनांक 9 नवम्बर, ई.स. 1867 में गुजरात के ववाणिया गांव में हुआ था। विशुद्ध ज्ञान और निष्काम भक्ति के समन्वय से सम्यक दर्शन की प्राप्तिरूप सुभगता हुई और वह भी केवल 23 साल की उम्र में। स्व में निमग्न रहकर महीनों तक वे एकांतवास में रहते थे। आत्मार्थी के लिए संपूर्ण मार्गदर्शनरूप उनकी अलौकिक रचना 'श्री आत्मसिद्धि शास्त्र' दर्शन शास्त्र को सरलता से समझ सके। इस प्रकार देकर उन्होंने हम पर परम उपकार किया है। चैत्र वदी पंचमी, 9 अप्रैल, ई.स. 1901 के दिन 33 वर्ष की आयु में राजकोट में उन्होंने पार्थिव देह का त्याग किया। उनके अमृतमय बोधवचन 'श्रीमद् राजचंद्र' ग्रंथ के रूप में संकलित हुए हैं, जो मुमुक्षुओं को पथदर्शन कर रहे हैं। लाखों अनुयायी उनके बोध द्वारा आश्रम, मंदिर और संस्थान के माध्यम से अपने जीवन को उच्चतर कक्षा पर ले जाकर आत्मविकास के मार्ग पर प्रगति के कदम बढ़ा रहे हैं।

श्रीमद् राजचंद्र मिशन धरमपुर

पूज्य गुरुदेवश्री राकेशभाई भगवान महावीर प्रणीत पंथ के प्ररूपक, श्रीमद् राजचंद्रजी के परम भक्त और आधुनिक युग के अध्यात्मिक आर्षद्रष्टा हैं। श्रीमद् राजचंद्र मिशन धरमपुर के संस्थापन द्वारा वे विश्वभर में अनेकानेक व्यक्तियों की जिंदगी में शांति का प्रकाश फैला रहे हैं। श्रीमद् राजचंद्र मिशन धरमपुर एक वैश्विक अभियान है, जो विश्वभर में व्याप्त 102 केन्द्रों के द्वारा साधकों को आध्यात्मिक विकास का मार्ग बताकर, एक सुंदर समाज का निर्माण कर रहा है। मिशन का मंत्र है : खुद का सत्य स्वरूप पहचानों और अन्य की निष्काम सेवा करो।

मॉडर्न रिव्यू, जून 1930 में गांधीजी ने लिखते हैं, 'इस व्यक्ति ने धर्म की बातों में मेरा हृदय जीत लिया है और आज कत किसी ने भी मेरे हृदय पर ऐसा प्रभाव अंकित नहीं किया है'।

सत्य एवं अहिंसा के मूल्य गांधीजी ने श्रीमद् राजचंद्रजी ने ग्रहण किए। भारत के स्वातंत्र्य संग्राम में उन मूल्यों के अभूतपूर्व प्रयोग किए और भारत को अहिंसक मार्ग से आजादी दिलाई। जिनका हृदयस्पर्शी निरूपण इस नाटक में हुआ है। वर्तमान समय में भौतिक सुखों के पीछे दौड़ रहे मनुष्य को यह नाटक विचार करने के लिए प्रेरित करता है कि जीवन का ध्येय क्या होना चाहिए? मानवता, सत्य, अहिंसा, विविधता का सम्मान जैसे मानवीय मूल्यों को अपनाकर जीवन को आंतरिकरूप से समृद्ध बनाया जा सकता है और एक प्रेममय, शांतिपूर्ण और मैत्रीभाव से भरपूर निर्भय समाज का निर्माण हो ऐसा सकारात्मक प्रभाव इस नाटक द्वारा दर्शकों पर होता है।

श्रीमद् राजचंद्रजी का यह 150वां जन्मजयंती वर्ष है। इसके निमित्तरूप हो रहे एक वर्षीय समारोह के अंगरूप, श्रीमद् राजचंद्रजी के परम भक्त तथा श्रीमद् राजचंद्र मिशन धरमपुर के संस्थापक पूज्य गुरूदेवश्री राकेशभाई की प्रेरणा से इस नाटक का निर्माण किया गया है।